तरीकों का उपयोग कर रहे हैं। भारत सरकार को इन सभी राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर गंभीरता से ठोस कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

माननीय उपसभापति महोदय, यह बहुत विषय गंभीर है। ये जो ऑनलाइन सट्टे और जुए चल रहे हैं, इनकी वजह से बहुत जगहों पर हमारी आने वाली पीढ़ी के लोग इसके शिकार बन रहे हैं। इसके माध्यम से बहुत सारा पैसा आतंकवाद और एंटी नेशनल एलिमेंट्स को जा रहा है। मैं आपसे विनती करता हूं कि यह मुद्दा राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और इसके ऊपर गंभीरता से तुरंत एक ठोस कार्यवाही करने की आवश्यकता है। महोदय, गाँव-गाँव में मोबाइल के माध्यम से और अलग-अलग तरीकों से 16-17 साल के बच्चों से लेकर 25 तक साल के लोग इसकी चपेट में आ रहे हैं। इसका बहुत ही गलत तरीके से उपयोग हो रहा है और यह हमारे देश की सुरक्षा के लिए एक खतरा बन गया है। ...(**समय की घंटी**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the matter raised by the hon. Member, Shri Ajeet Madhavrao Gopchade: Shri R. Girirajan (Tamil Nadu), Shri Devendra Pratap Singh (Chhatisgarh), Shri Jose K. Mani (Kerala), Dr. Sasmit Patra (Odisha), Shrimati Mahua Maji (Jharkhand), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Shri Dhananjay Bhimrao Mahadik (Maharashtra), Shri M. Mohamed Abdulla (Tamil Nadu), Shri Chunnilal Garasiya (Rajasthan), Dr. Bhim Singh (Bihar), Shri Madan Rathore (Rajasthan), and Shri Niranjan Bishi (Odisha).

श्री उपसभापति : माननीय राघव चड्ढा जी, आपका विषय है, Concern Over Prevailing Issue of Air Pollution in North India And Its Impact. श्री विक्रमजीत सिंह साहनी, श्री मानस रंजन मंगराज, श्रीमती रंजीत रंजन, श्रीमती रजनी अशोकराव पाटिल आपके विषय के साथ एसोसिएट कर रहे हैं। आप अपने विषय को सदन में रेज़ कीजिए।

Concern over prevailing issue of air pollution in North India and its impact

श्री राघव चड्ढा (पंजाब) : सर, आज उत्तर भारत ने एक धुएं की चादर ओढ़ी हुई है और हर सांस के साथ हम न जाने कितनी सिगरेट्स और बीड़ी का धुआँ अपने अंदर लेकर जा रहे हैं। सर, एयर पॉल्यूशन सिर्फ दिल्ली का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह पूरे उत्तर भारत का मुद्दा है। सर, प्रदूषण सरहद नहीं समझता और आज दिल्ली से कहीं ज्यादा वायु प्रदूषण भागलपुर, मुजफ्फरनगर, विदिशा, नोएडा, हापुड़, भिवानी, भिवाड़ी, आगरा और फरीदाबाद जैसे इलाकों में है। क्योंकि एयर पॉल्यूशन का सारा दोष देश के किसान पर मढ़ा जाता है, इसलिए आज मैं उस किसान की आवाज उठाना चाहता हूं। सर, आईआईटी की एक स्टडी बताती है कि स्टबल बर्निंग वायु प्रदूषण का एक कारण है, इकलौता कारण नहीं है, लेकिन फिर भी सारा दोष किसान को दिया जाता है। हम पूरा साल तो यह कहते हैं कि किसान हमारा भगवान है, हमारा अन्नदाता है, लेकिन जैसे ही नवंबर का महीना आता है, हम कहते हैं कि किसान क्रिमिनल है, इसको जेल में डाल दिया जाए, इस पर फाइन लगाया जाए। इसीलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि कोई भी किसान जान-बूझकर

अपनी खुशी से पराली नहीं जलाता है, बल्कि मजबूरी में जलाता है। इस साल तो हमारे सूबे पंजाब में स्टबल बर्निंग इंसिडेंट्स में 70% से ज्यादा गिरावट देखी गई है, जबकि मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा में पराली जलाने की वारदातें बढ़ी हैं। सर, पंजाब ने धान की खेती क्यों शुरू की? पंजाब ने धान की खेती इसलिए शुरू की, क्योंकि देश में अनाज की कमी थी और देश का पेट पालना था। धान की खेती से पंजाब का भारी नुकसान हुआ। हमारा पानी 600 फीट नीचे चला गया, सॉइल डिग्रेडेशन हो गया और वह भी तब हुआ, जब चावल हमारी खुराक नहीं है। सर, हम पंजाबियों की खुराक चावल नहीं है। धान की फसल काटने के बाद जो पराली बचती है, उस पराली को साफ करने के लिए किसान के पास मात्र 10 से 12 दिन होते हैं, क्योंकि अगली फसल बीजनी होती है। अगर 10 से 12 दिन में इस पराली को साफ न किया जाए, तो जो अगली फसल है, उसकी यील्ड गिर जाती है। इसीलिए किसान को मजबूरन पराली जलानी पड़ती है। अगर हम इसके सॉल्यूशन की बात करते हैं, जैसे हैप्पी सीडर और पैडी चॉपर जैसी मशीनें हैं, उन मशीनों को चलाने के लिए बहुत ज्यादा पैसा खर्च करना पड़ता है। दो से तीन हजार रुपए प्रति एकड़ किसान की जेब से लगते हैं, इसलिए वह किसान, जो आज खेती से अपनी लागत नहीं निकाल पा रहा है, वह पैसा कहाँ से लाएगा? वह मजबूरी में जलाता है और इसमें सबसे ज्यादा नुकसान तो उस किसान और उसके परिवारों का होता है, जिसको उस जहरीली हवा में सांस लेना पड़ता है। सर, मैं इसका एक समाधान लाया हूँ। यह एक शॉर्ट-टर्म सॉल्यूशन है। अगर हम पंजाब और हरियाणा के किसानों को इस पराली से निजात दिलाने के लिए ढाई हजार रुपए प्रति एकड़ देते हैं, तो पंजाब का एक भी किसान पराली नहीं जलाएगा। इसमें दो हजार रुपए भारत सरकार देगी, 500 रुपये पंजाब सरकार देगी और हम इस पराली की समस्या का शॉर्ट टर्म सॉल्यूशन पा लेंगे। इसका लॉन्ग टर्म सॉल्यूशन है - क्रॉप डायवर्सिफिकेशन, यानी हमें धान की खेती से कॉटन, मक्की, पल्सेज़, ऑइल सीड्स की ओर बढ़ना होगा। हम एआई की तो बहुत बात करते हैं, लेकिन एक्यूआई की भी बात करनी होगी। जैसे राजनीतिक दल बूथ-बूथ पर रणनीति ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the issue raised by Shri Raghav Chadha: Shri Niranjan Bishi (Odisha), Shrimati Jebi Mather Hisham (Kerala), Shri A.A. Rahim (Kerala), Shri Anil Kumar Yadav (Telangana), Shri R. Girirajan (Tamil Nadu), Shri Haris Beeran (Kerala), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Shri Sant Balbir Singh (Punjab), Dr. John Brittas (Kerala), Shri M. Mohamed Abdulla (Tamil Nadu), Shrimati Phulo Devi Netam (Chhattisgarh), Shri Sandosh Kumar P (Kerala), Shri Sanjeev Arora (Punjab), Shrimati Mahua Maji (Jharkhand), Dr. Sasmit Patra (Odisha) and Dr. Kanimozhi NVN Somu (Tamil Nadu).